"तारसप्तक की कविताओं में अभिव्यक्त अज्ञेय का प्रकृति बोध"

सना फ़ातिमा
शोधार्थी हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय,अलीगढ़ 202002

शोधसार-: अज्ञेय द्वारा अपनी कविताओं मे प्रकृति, प्रेम एवं सौन्दर्य को महत्व देना उनकी संवेदना की अद्वितीयता का सूचक है। उनकी कविताओं में बहुत गहराई से उभरती एक दुनिया है, जो प्रकृति के साथ संबंधित है, प्रेम के रंगों मे रंगी है और सौन्दर्य से भरपूर है। अज्ञेय की प्रकृति चेतना अत्यंत व्यापक है। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूपों का चित्रण अपने काव्य में किया है। अज्ञेय की कविताओं में प्रकृति की रुनझुन और उसका यथार्थवादी चित्रण समृद्धि और विविधता को प्रतिस्थापित करते हैं। प्रेम, संवेदना, और सौंदर्य नए रूप में उभरकर कवि की संवेदना को विशेषता से आभूषित करते हैं, और इसके माध्यम से एक नया दृष्टिकोण प्रकृति और मानवीय भावनाओं के साथ जुड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मुख्य रूप से अज्ञेय की तार सप्तक मे संकलित कविताओं मे अभिचित्रित 'प्रकृति' पर नवीन दृष्टि से विवेचन किया गया है।

कुंजी शब्द- अज्ञेय, प्रकृति, तारसप्तक, कविता, सौन्दर्य ।

मूल आलेख-: प्रकृति हमारे चारों ओर फैली सौंदर्य की छाया है, जो हमें अपनी ओर खींचती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, हम प्रकृति के संपर्क में रहते

हैं, जिससे हमें जीवन की सुंदरता, प्राकृतिक रंग-बिरंगे दृश्य, और स्वभाविक ऊर्जा का अनुभव होता है। प्रकृति मानव जीवन के अस्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है, जो जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों में एकाधिकृति और शान्ति का अहसास कराती है। इसके माध्यम से मानव प्रकृति संबंध का महत्वपूर्ण भाग बनता हैं, जो स्वास्थ्य, सांत्वना, और सामंजस्य की अनुभूति कराता है। अज्ञेय की कविताओं में प्रकृति को मानव जीवन का आधार और सौंदर्य का स्रोत माना गया है। उनकी संवेदना में 'प्रकृति के सौंदर्य में मोह' होने का विशेष विवेचन है, जिससे कोई भी मनुष्य इसे अनदेखा नहीं कर सकता लेकिन "उनका यह प्रकृति प्रेम किसी सूक्ष्म तत्व के प्रति लगाव के कारण नहीं वरन् प्रकृति के पार्थव सौन्दर्य से मिलने वाले आनन्द के कारण था।"1 अज्ञेय ने इस अद्वितीय सौंदर्य को मानव जीवन की रूपरेखा का आधार मानकर उसके महत्व को उजागर किया है, जिससे उनकी कविताओं में प्रकृति भिन्न-भिन्न रूपों मे दिखाई पड़ती है।

'तारसप्तक' ने 'अज्ञेय' को संपादक एवं कवि की हैसियत से प्रतिष्ठित किया है, जिससे साहित्य के क्षेत्र में नया और अद्वितीय दृष्टिकोण आया। 'तार सप्तक' में संकलित उनकी कविताओं में प्रकृति के साथ मानव के संबंधों का सजीव चित्रण मिलता है। प्रणयानुभूति के माध्यम से प्रकृति को दिखाना एक सामान्य और सुंदर प्रक्रिया है जिसमें प्रेम और प्रकृति का मिलन साकार रूप से व्यक्त होता है। कवि जब प्रेम रूपी भावनाओं में डूबा होता है, तो प्रकृति को उसके आत्मविकास का साक्षात्कार करने का स्थान मिलता है। इस संदर्भ में प्रकृति कवि के साथ सहयोगी की भूमिका निभाती है, उसके सुख में सहजता और समर्थता दिखाती है, और

उसकी पीड़ा में उसकी सहभागी होती है । अज्ञेय की 'तार सप्तक' की कविताओं के केन्द्र में भी प्रेम और प्रकृति है। इनकी कविताओं में प्रेम और प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। प्रकृति का मनोरम चित्रण अज्ञेय ने तार सप्तक में किया है, जिसका एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"सवेरे उठा तो धूप खिलकर छा गई थी
और एक चिड़िया अभी-अभी गा गयी थी।"2

'जैसे तुझे स्वीकार हो', 'भादों की उमस', 'किसने देखा चाँद', 'बदली के बाद', 'सवेरे उठा तो', 'रात होते प्रात होते' आदि 'तार सप्तक' की कविताओं मे अज्ञेय प्रकृति के मनोरम चित्र प्रस्तुत करते नज़र आते है। लोचनों की युगल जोड़ी का उल्लेख करके अज्ञेय ने उस सांगीतिक रूप का संकेत किया है जिसमें प्रेम और प्रकृति का अद्‌वितीय मेल होता है-

"देखते ही मैं तुरत, नि:शब्द तुलना में तुम्हारे
कुछ उनींदे लोचनों की युगल जोड़ी कर लिया करता
कभी था याद।"3

वही दूसरी ओर प्रेम की संवेदना उनके प्रकृति चित्रण में दिखाई देती है-

"बाहू मेरे घेर कर तुम को रुके रहे
रात की गुंजरित स्पन्दनहीनता में
निभृत की उत्कट प्रतीक्षा में
नहीं माँगा भी तुम्हारे प्यार का संकेत।"4

प्रेम को दर्शाती हुई उनकी प्रकृति परक कविता 'चार का गजर', में अज्ञेय प्रकृति के अत्यंत मनोरम चित्र करते नज़र आते हैं जहाँ प्रकृति सौन्दर्य अपनी सम्पूर्णता मे नज़र आता है-

"किन्तु दीप्तिमान नारी मुख को
आकृति नहीं है स्पष्ट, किंतु मानो फ़लक को भेदती सी
दृष्टि उन अप्सरा की आँखों की
बैठी जा रही है कवि युवक के उर में।"5

अज्ञेय ने अपनी कविताओं के माध्यम से मानव चेतना और प्रकृति के साथ जुड़े संबंध को एक नए और महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। वे अपनी कविताओं में प्रकृति के दुर्लभ और सुंदर चित्रों के माध्यम से मनुष्य को अपनी असीम स्वतंत्रता का अनुभव कराते है। सागर, नदी, पर्वत, चाँद, और अन्य प्राकृतिक तत्वों के चित्रों के जरिए, अज्ञेय ने मानव चेतना को प्रकृति के साथ एकात्म बनाए रखने की अहमियत को उजागर किया है। उनकी कविताएं एक सांस्कृतिक जागरूकता उत्तेजित करती हैं और मानवता के और प्राकृतिक संबंधों को सुंदरता और आत्म-ज्ञान के साथ चित्रित करती हैं। अज्ञेय के प्रकृति के प्रति गहरे लगाव के संबंध में यतीन्द्र मिश्र लिखते है कि "प्रकृति के प्रति अज्ञेय का यह अनुराग इतना मर्मस्पर्शी और सहज रहा है कि बहुत सारी कविताओं से कुछ आंतरिक पंक्तियों को अलग हटाकर पढ़ने से एक नए ढंग का अर्थ वैशिष्ट्य देखने को मिलता है। प्रकृति की संवेदना को जितना विलक्षण और चाक्षुष रंग रोगन अज्ञेय दे पाए है वह उनके समकालीनों में मुश्किल से मिलती है।"6

अज्ञेय पर फ़्रायड के मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव था जिसके फलस्वरूप अज्ञेय यह मानते थे कि यौन कुंठाएँ व्यक्ति के मानस में घर कर लेती है और उसके विकास को अवरुद्ध करती है। तार सप्तक के अपने वक्तव्य में अज्ञेय इस बात को स्पष्ट करते हैं कि “आधुनिक युग का साधारण व्यक्ति यौन वर्जनाओं का पुंज है। आज के मानव का मन यौन परिकल्पनाओं से लदा हुआ है और वे कल्पनाएं सब दमित और कुंठित है। उसकी सौंदर्य चेतना भी इससे आकांत है। उसके उपमान सब यौन प्रतीकार्थ है।”7 अज्ञेय ने "सावन मेघ" कविता में मांसलता और यौन प्रतीकार्थ को प्रकृति के माध्यम से चित्रित किया है। वह विशेष रूप से मेघों की विविधता के माध्यम से मानव भावनाओं की आद्यता को प्रकट करते हैं। मेघों के काले आगमन का चित्रण उनकी कविता में भूमि के कम्पित उरोजों के साथ, इन्द्र के नील वक्ष की छाँव और वज्र की भाँति तड़ित से झुलसा हुआ है, जिससे मांसलता और शक्ति का अत्यंत प्रभावकारी चित्रण होता है-

“घिर गया नभ उमड़ आये मेघ काले
भूमि के कम्पित उरोजों पर झुका सा
विशद, शवासाहत, चिरातुर
छा गया इन्द्र का नील वक्ष
वज्र सा,यदि तड़ित् से झुलसा हुआ सा।”8

लेकिन अज्ञेय इसे कवि के लिए कठिनाई मानते है। इसी लिए उन्हें चाँदनी खोटी दिखती है। “कवि के लिए इस परिस्थिति में और भी कठिनाइयां है एक मार्ग यौन स्वप्न दृष्टि का दिवास्वप्नों का है, उसे वह नहीं अपनाना चाहता।

फिर वह क्या करें? यथार्थ-दर्शन केवल कुंठा उत्पन्न करता है। वास्तव की वीभत्सता की कसौटी पर चाँदनी खोटी दिखती है।”9 अज्ञेय ने चाँदनी को एक नए दृष्टिकोण से चित्रित किया है, जो सामान्य और आपारंपरिक व्यक्तित्व की परंपराओं से हटकर दिखता है। जिस चाँदनी के सौंदर्य की महिमा अनेक कवियों ने अनेक रूपों में की है अज्ञेय उसका एक अलग पक्ष दिखाते नज़र आते हैं। अज्ञेय प्रतिस्पर्धात्मक रूप से चाँदनी के सौंदर्य का वर्णन करते हुये उसे एक दुर्लभ और अप्राकृतिक तत्व के रूप में दिखाते है। उस चाँदनी की असीम सुंदरता को अज्ञेय आकाश के झूठे गहने से तुलना करते दिखाई देते हैं-

“वंचना है चाँदनी सित,
झूट वह आकाश का निरवधि गहन विस्तार-
शिशिर की राका-निशा की शान्ति है निस्सार!
दूर वह सब शांति, वह सित भव्यता, वह
शून्य के अपलेप का प्रस्तार।”10

अज्ञेय ने यौन प्रतीकार्थ को प्रकृति के साथ जोड़ने के लिए विभिन्न उपमानों का सहारा लिया है, जो एक विविध और रोमांटिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। “"आह मेरा श्वास है उत्तप्त"11 यह उपमान यौन प्रतीकार्थ को उत्तेजना और आग्रह से भरा दर्शाता है, जैसा कि उच्चता और उत्तप्तता के साथ श्वास का अनुभव होता है।”"धमनियों में उमड़ आयी है लहू की धार"12 इस उपमान के माध्यम से, अज्ञेय ने प्रेम और यौन आवेग को रक्त की धारा के साथ संबोधित किया है, जिससे एक रोमांटिक और आधिकारिक चित्रण प्रस्तुत होता है। "प्यार है अभिशप्त- तुम

कहाँ हो नारि"13- इस पंक्ति से वह प्रेम को एक अग्निशिखा के समान दर्शाते हैं, जो आग्नेय प्रेम और उत्साह की अभिव्यक्ति हो सकती है। अज्ञेय ने इन उपमानों के माध्यम से यौन प्रतीकार्थ को प्रकृति के साथ सुंदरता से मिलाकर विवेचित किया है, जो उनकी कविता को संवेदनशीलता और आकर्षण से भर देता है।

अज्ञेय ने प्रगतिवादी चेतना के सन्दर्भ में प्रकृति को एक नए रूप में प्रस्तुत किया है, जो समूह और जन जीवन के साथ जुड़ा हुआ है। मेहराबें एक सुंदर और सुधारित मंदिर की तरह हो सकती हैं, जिससे यह श्रेष्ठता की ऊँचाई को बयान करता है। यह भावना कि जन जीवन एक अजस्त्र प्रवाहमान नदी की भाँति है, जिसमें उत्साह, प्रेरणा, और जीवन की प्रगति की दिशा होती है, अज्ञेय की कविता मे स्पष्टतः देखा जा सकता है-

“समूह का अनुभव जिसकी मेहराबें है,

और जन जीवन की अजस्त्र प्रवाहमान नदी जिसके नीचे से बहती है।”14

अज्ञेय ने प्रकृति को समृद्धि और चेतना के साथ जोड़ते हुए एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जिसमें समूह और जन जीवन का महत्वपूर्ण योगदान है। अज्ञेय अपनी कविताओं में प्रकृति का चित्र अंकित करते हुए उसमें संवेदनशीलता भर देते हैं ।

अज्ञेय जीवन की अनुभूति को प्रकृति से जोड़कर देखने वाले कवि है वे प्रकृति के संदर्भों को अद्वितीय अनुभूतियों के माध्यम से उल्लेख करते हैं और उन्हें जीवन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मानव जीवन का अस्तित्व सीधे रूप से

प्रकृति से ही सम्बन्धित है, और इसका सही अर्थ यह है कि मानव अस्तित्व प्रकृति के अंतर्गत ही है। अज्ञेय लिखते है कि "साधारण बोलचाल में प्रकृति मानव का प्रतीपक्ष है अर्थात्- मानवेतर ही प्रकृति है- वह सम्पूर्ण परिवेश जिसमे मानव रहता है, जीता है, भोगता है और संस्कार ग्रहण करता है। और भी स्थूल दृष्टि से देखने पर प्रकृति मानवेतर का वह अंश हो जाती है जोकि इन्द्रिय-गोचर है- जिसे हम देख, सुन और छू सकते हैं, जिसकी गन्ध पा सकते है, जिसका आस्वादन कर सकते हैं।"15 अज्ञेय ने अपनी कविता में जीवन और प्रकृति के अटूट संबंध को दर्शाने का प्रयास किया है। उनकी बातें गर्मी, मिठास, हरियाली, और उजाले के साथ जीवन के विविध पहलुओं को सुंदरता से जोड़ती हैं, जिससे जीवन की अमूर्त प्रकृति का आनंद लिया जा सकता है-

"मैंने धूप से कहा : मुझे थोड़ी गरमाई दोगी- उधार.....
सब से उधार माँगा सबने दिया
यों मैं जिया और जीता हूँ
क्योंकि यही सब तो है जीवन-
गरमाई, मिठास, हरियाली, उजाला।"16

इसके अतिरिक्त उनकी कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण भी दिखाई देता है। जहाँ अज्ञेय नए प्रयोगों के माध्यम से प्रकृति को मानवीय रूप मे चित्रित करते हुए नज़र आते हैं-

"मैं ने कहा-
उठ री लजीली भोर रश्मि, सोयी....

वो प्रगल्भा मानमयी

बावली सी उठ सारी दुनिया में फैल गयी।17

***

“मानो स्फुट अधरों के बीच से प्रकृति के

बिखर गया हो कल हास्य।”18

***

“भागा जा रहा है चाँद।”19

अज्ञेय को प्रकृति से अत्यन्त लगाव था। वे प्रकृति के विषय में बहुत कुछ जानते थे। ‘आज मैं पहचानता हूँ’ कविता मे अज्ञेय अपने प्रकृति के गहरे ज्ञान का परिचय कुछ इस प्रकार देते है-

“आज मैं पहचानता हूँ राशियां, नक्षत्र,

ग्रहों की गति, कुग्रहो के कुछ उपद्रव भी,

मेखला आकाश की;

जानता हूँ।”20

अज्ञेय ने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न बिम्बों की छाप बनाई है, जिससे उनकी काव्य चेतना में विस्तार हुआ है। "निकट गली में, पिल्ले की करुण रिरियाहट”21 हो या ‘छा गया इन्द्र का नील वक्ष- वज्र सा, यदि तड़ित से झुलसा हुआ-सा”22, अज्ञेय कविता में होने वाली प्राकृतिक घटनाओं को अनूठे और विविध तरीके से अभिव्यक्त करते है। उनके बिम्ब नए परिदृश्यों और नए अनुभवों को साझा करते हैं। अज्ञेय नये और अनूठे बिम्बों के माध्यम से

कविता को सामान्य से हटा कर नई प्रेरणा और भावनाओं से भर देते है, जिससे प्राकृतिक विविधता को सही तरीके से अनुभव किया जा सकता है। उनकी कविताओं में प्राकृतिक तत्वों का उपयोग, जीवन की गहराईयों में अवलोकन, और समाज के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण उनके अनूठे कल्पनात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। इस सन्दर्भ मे डॉ राजेंद्र प्रसाद का कथन दृष्टव्य है कि "अज्ञेय की कविताओं में प्रकृति चित्रण में पर्याप्त यथार्थपरकता विद्यमान् है। छायावादी कवि प्रकृति में जिस कोमलता एवं सौंदर्य का दर्शन करते थे 'तार सप्तक' के कवि उसमें अब वैसा सौंदर्य नहीं देखते। अज्ञेय की कविता में इसके स्पष्ट लक्षण विद्यमान् है।"23

निष्कर्ष- अज्ञेय ने 'तार सप्तक' की कविताओं में प्रकृति के सौंदर्य को मानवीय भावनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है, जिससे एक विशेष अनुभव मिलता है। उनकी कविताओं में प्रकृति का चित्रण एक माधुर्यपूर्ण और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से होता है, जिससे प्रकृति का सानिध्य मानवीय अनुभवों में भी प्रकट होता है। अज्ञेय ने जीवन के प्रारंभ से ही प्रकृति के सौंदर्य में समाहित होने का अनुभव किया, और उनका यह संबंध आजीवन बना रहा। वे प्रकृति को एक नए सौंदर्य और राग संबंध के साथ देखने का नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करते है। उनकी कविताओं में प्रकृति के साथ जुड़े नए रूप, नए रंग, और नए भावनात्मक पहलुओं का सुंदर चित्रण मिलता है। उन्होंने प्रकृति की करूणा और उसके प्रति समर्पण की भावना को अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत किया है। अज्ञेय की 'तार सप्तक' की

कविताएं प्रकृति के अनन्त सौंदर्य और समृद्धि को साझा करती हैं, जिससे नए रागों और अनुभवों का संगम होता है।

आधार ग्रन्थ- तार सप्तक

सन्दर्भ-:

1- आचार्य, नन्द किशोर, अज्ञेय की काव्य तितीर्षा, सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर, प्रथम संस्करण, 1970, पृष्ठ 46

2- अज्ञेय, तार सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2021, पृष्ठ 250

3- पूर्व, पृष्ठ 239

4- पूर्व, पृष्ठ 239

5- पूर्व, पृष्ठ 233

6- मिश्र यतीन्द्र, जितना तुम्हारा सच है, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 15

7- पूर्व, पृष्ठ 223

8- पूर्व, पृष्ठ 226

8- पूर्व, पृष्ठ 224

9- पूर्व, पृष्ठ 228

10- पूर्व, पृष्ठ 226

11- पूर्व

12- पूर्व

13- पूर्व, पृष्ठ 249

14- अज्ञेय, हिन्दी साहित्य:एक आधुनिक परिदृश्य, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1967, पृष्ठ- 157

15- पूर्व, पृष्ठ 250

16- पूर्व, पृष्ठ 246

17- पूर्व, पृष्ठ 241-242

18- पूर्व, पृष्ठ 233

19- पूर्व, पृष्ठ 238

20- पूर्व, पृष्ठ 227

21- पूर्व, पृष्ठ 226

22- प्रसाद, डॉ राजेंद्र, तार सप्तक के कवियों की समाज चेतना, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, तृतीय संस्करण, 2005, पृष्ठ 267